International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 442-444

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 442-444
www.allresearchjournal.com
Received: 11-11-2017
Accepted: 13-12-2017

सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

Corresponding Author:
सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय
हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार,
भारत

हल्दीघाटी एवं वीरवर कुँअर सिंह वीर महाकाव्य राष्ट्रीय नवजागरण का संदेश

सीता कुमारी

सारांश :
'श्री श्याम नारायण पाण्डेय' ने 'हल्दीघाटी' में मध्यकालीन भारत के मुगल शासक अकबर एवं राणा प्रताप के बीच 'हल्दीघाटी' के मैदान में होने वाले महासमर की घटनाओं को लक्ष्यकर इस महाकाव्य का निर्माण किया है। ऐतिहासिक घटनाएं हर नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायिनी सिद्ध होती है।
'आरसी प्रसाद सिंह' ने 'वीर कुँअर सिंह' महाकाव्य की रचना कर हिन्दी साहित्य जगत् में नयी चेतना जागृत करने का कुशल प्रयास किया है जिससे स्वदेश की पुरातन निष्प्राण मृत्तिका को नूतन बनाने का स्वस्थ संदेश मिला और भविष्य में मिलता रहेगा।
'महाराणा प्रताप' एवं 'वीर कुँअर सिंह' दोनों हमारे राष्ट्र–पुरुष हैं। बिहार के बाबू 'वीर कुँअर सिंह' की आर्थिक हालत नाजुक थी, उन्हें सभी अधीनस्थ कर्मचारियों ने अंग्रजों से युद्ध नहीं करने की सलाह दी थी। लेकिन उस वीरवर ने अस्सी वर्ष की उम्र में भी अंग्रेजों से लोहा लिया और अंत में उनकी पराजय हुई। महाराणा प्रताप ने सर्वाधिक शक्तिशाली मुगल शासक अकबर से लोहा लिया। दोनो महाकाव्यों के कथानक वस्तुतः दो वीरों की जीवन गाथाएँ हैं, जिसे पढ़ने के बाद मुर्दे भी प्राणवंत हो जाते है तथा क्षार शोले। इन रचनाओं को समाजिक हित के लिए दर्शाया गया है।

प्रस्तावना :
'हल्दीघाटी' महाकाव्य मेवाड़ के महावीर महाराणा प्रताप के जीवन पर्यंत मुगल बादशाह अकबर के साथ युद्ध तथा संघर्ष की गाथा है। प्रताप ने अपने छोटे से राज्य और मुगलों की तुलना में बहुत छोटी सेना तथा अपर्याप्त सैन्य सामग्रियों के साथ प्रायः पूरे भारत के शासक अकबर के साथ हल्दीघाटी का युद्ध किया। अकबर की विशालकाय सेना का नेतृत्व कुशल योद्धाओं के हाथ में था और उस समय की सभी उन्नत आयुधों एवं तकनीकों से मुगल सेना सुसज्जित थी। फिर भी मुगल महाराणा प्रताप को पकड़ न सके। वह महान् वीर अनेक कष्टों को सहता रहा परन्तु मुगलों के आगे न झुका। अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व दाव पर लगाने वाले महाराणा प्रताप की जीवन गाथा का श्री श्यामनारायण पांडेय ने ओजपूर्ण शब्दों में वर्णन किया है।
'वीरवर कुँअर सिंह' संभवतः प्रथम महाकाव्य है जिसमें प्रारंभ में ही सभी पात्रें के परिचय प्राप्त हो जाते हैं। श्री आरसी प्रसाद सिंह ने भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी बाबू कुँअर सिंह का भारत की स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम में योगदान, उनके द्वारा अंग्रेजी सेना के छक्के छुड़ा देने, उन्हें चकमा देने सम्बन्धी सभी कारनामों का वीर रस से ओत–प्रोत शब्दों में वर्णित किया है। श्री आरसी प्रसाद सिंह के द्वारा लिखे गये इस प्रबंध काव्य का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है की इस वृद्ध शेर (वि.डी. सावरकर के शब्दों में) पर इससे पूर्व कोई इस प्रकार का महाकाव्य नहीं मिलता, जो हमारे आज के युवाओ में भूमंडलीकरण के सुप्रभाव व कुप्रभाव को युवामन में जागृत कर सके। अनेक स्वार्थी इतिहासकारों नें सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को सिपाही विद्रोह बताया है और वीर कुँअर सिंह को क्षेत्रीय सामंत। परन्तु, सन् 1857 ई. के उस व्यापक संग्राम की गहन एवं विस्तृत चर्चाएँ आज पठन–पाठन व पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल किये जाने की आवश्यकता है। ताकि हमारे 'मनचले' युवामन को देश प्रेम की शिक्षा प्राथमिक स्तर से ही मिल सके।
'वीरवर कुँअर सिंह' महाकाव्य में सन् 1857 ई. के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक महावीर कुँअर सिंह की शौर्य गाथा को श्री आरसी प्रसाद सिंह ने बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। बाबू कुँअर सिंह एक छोटे से रियासत जगदीशपुर के जमींदार शासक थे। यह क्षेत्र वर्त्तमान आरा के नजदीक है। कुँअर सिंह भारतभूमि की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। पटना, सोनपुर आदि कई स्थानों पर 1857 ई. के पूर्व क्रांतिकारियों की बैठकों में उनके सम्मिलित होने का पता चलता है। ऐसा तत्कालीन पटना के जिला मजिस्ट्रेट के द्वारा अपने वरीय अधिकारी को लिखे पत्रों में लिखा है। जब दानापुर के देशी सैनिकों ने विद्रोह किया तब उन्होंने बाबू कुँअर सिंह से ही नेतृत्व करने की याचना

की जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस 80 वर्षीय महावीर के शौर्य से बड़े–बड़े रण बाँकुरे घबरा गए। उनके पराक्रम को देखकर अंग्रेज इतिहासकारों ने सत्य ही लिखा कि अगर यह अस्सी वर्षीय शेर अपनी 40 वर्ष की अवस्था में युद्ध करता तो अंग्रेजों को उसी समय भारत छोड़ कर भागना पड़ता। ''इतिहासकार होम्स भी कुछ ऐसे ही विचारों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि–'हमलोग (फिरंगी) बहुत सौभाग्यशाली थे कि क्रांति के समय कुँअर सिंह की आयु 40 वर्ष नहीं थी। वह बूढ़ा राजपूत ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ आन से लड़ा और शान से मरा।''

'वीरवर कुअँर सिंह' युवाओं में देश के प्रति प्रेम जागृत करने की अहम कुंजी सावित हो,ऐसी कल्पना की जा सकती है, क्योंकि आज के समाज में कुछ प्राणी मात्र अपने से मतलब रखते हैं, जो मानवोचित नहीं है। भारत देश की रक्षा में हमारी अनगिनत माताओं ने अपने लाल खोए हैं। उनमें देश प्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी प्रतीत होती है, जो आधुनिक युवाओं व माताओं में होना अनिवार्य है।

शोध–अध्ययन की प्रेरणा से देश हित की भावना को लेकर ही समाज का निर्माण युवा पीढ़ी कर सकता है। ऐसा होने पर ही 'निर्भया हत्याकांड' जैसी घट रही रोज की घटनायें कम हो सकती हैं, जिससे हमारी माताएँ, बहनें समाज में निर्भीक हो कर चल सके। गाँवों की पगडंडियो में राह चलते युवा को देख कर सहम कर, पागल कुत्ते समझ कर भागने की नौवत न आए। हमारे मन में ये आशाएँ जागृत हों की वह मेरा देश रक्षक, माँ–बहनों की लाज का रक्षक, वीर प्रताप व कुँअर सिंह की तरह महापुरुष हैं, जो हमारी अस्मिता की रक्षा करने में सदा तत्पर रहेगा। अतः कवि ने दोनों माहाकव्यो में जिस तरह वीर रस का संचार करते हुए दो वीर महापुरुषों का वर्णन किया है, वैसा अन्यत्र दिखाई नही पड़ता है और मैं भी कह सकती हूँ की वीर रसमें डूबे शोध–प्रबंध 'हल्दीघाटी' एवं 'वीरवर कुँअर सिंह' महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन जनमानस पटल पर देश के प्रति प्रेम भावना जागृत करने की प्रेरणा बन कर साहित्य जगत को समृद्ध करेगा।

'हल्दीघाटी' की कथा मध्यकाल की है। इसलिए कथानक परिदृश्य भी उसी समय का है। जबकि 'वीरवर कुँअर सिंह' आधुनिक काल की घटना है। दोनों वीरकाव्यों के नायक अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए ही संघर्ष करते है। परंतु महाराणा प्रताप राज्य तथा साधन में कुँअर सिंह से धनी है और उनके युद्ध का क्षेत्र मेवाड़ के नजदीक ही है। शत्रुसेना प्रताप के द्वार पर युद्ध के लिए आती है और प्रताप को उस अवश्यंभावी युद्ध की तैयारी हेतु पर्याप्त समय भी मिलता है, परन्तु तैयारी के क्रम में 'तोप' की महत्ता को वे ध्यान में नहीं रख पाते है जो शत्रु के विजय का साधन बनता है।

महाराणा प्रताप को मेवाड़ की भूमि से प्रेम था, इसलिए मेवाड़ पर मुगल वंश का शासन न हो पाया। महाराणा प्रताप ने मातृभूमि की रक्षा के प्रण के साथ अपने दुश्मनों से मुकावला करते हुए अपनी धरती को स्वंत्रत रखने की पूर्ण कोशिश की है। इन महापुरुषों की गाथा को दोहराने की आवश्यकता है, जिससे की युवाओं के मानस में समाज व राष्ट्रहित की भावना जागृत हो सके। ऐसा होने से ही हमारे समाज से कुरीतियों, अंधविश्वासों, ललनाओं, किशोरियों के साथ होने वाली बदसलूकी का अंत हो सकेगा। अपनी जननी व जन्म भूमि और अपने राष्ट्र के लिए दी गई कुर्बानी को याद करते हुए महराणा प्रताप एवं वीर कुँअर सिंह से प्रेरणा लेने एवं उसे जीवन में उतारने की जरूरत है। नम्रता एक बड़ी पूँजी है। दोनों महाकाव्यों के नायकों ने जिस तरह नम्रतापूर्वक अपने समाज को एकत्रित कर दुश्मनों से लोहा लिया है, ठीक उसी प्रकार वर्तमान समाज की विविध समस्यायों पर नम्रता पूर्वक विचार करते हुए समाज के नवनिर्माण का प्रयास आवश्यक है।

प्रताप अपने भाई शक्ति सिंह को भी मिलाकर नहीं रख पाते है। शक्ति अकबर को इनके सभी भेद बताकर उसकी मदद करता है। दूसरी ओर बाबू कुँअर सिंह की रियासत छोटी थी। उनकी रियासत कर्ज में डुबी थी, फिर भी उन्होंने अपनी रियासत में तोप बनाने का कारखाना स्थापित करवाया था। बाबू कुँअर सिंह का नेतृत्व उस समय के अन्य नायकों ने स्वीकार किया था। इस प्रकार कुँअर सिंह सन् 1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय स्तर के नायक के रूप में विख्यात है। उन्होंने न केवल जगदीशपुर–आरा बल्कि बिहार से बाहर आजमगढ़ आदि जगहों पर अंग्रेजों को उनके गढ़ में घुस कर मारा और वहाँ स्वतंत्रता का ध्वज फहराया। उन्होंने अपने भाइयों सहित अन्य संबंधियों को भी संगठित रखा। कुँअर सिंह के बाद उनके भाई अमरसिंह के नेतृत्व में भी संग्राम जारी रहा। इस प्रकार व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर नायक के रूप में कुँअर सिंह श्रेष्ठ प्रतीत होते है।

दोनों ही महाकाव्य शिल्प विधान की दृष्टि से उत्कृष्ट है। दोनों में महाकाव्य की समस्त विशेषताएँ समाहित है। दोनों ही विशाल है और सर्गों में विभाजित है। दोनों महाकाव्यों के नायक महान वीर है। उनके चरित्र समाज के लिए प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है। फिर भी कुँअर सिंह स्वतंत्रता संग्राम के परिप्रेक्ष्य में श्रेष्ठ प्रतीत होते है।

अंग्रेजी शासनकाल में जब श्री श्यामनारायण पाण्डेय ने 'हल्दीघाटी' महाकाव्य की रचना की तो पुस्तक अंग्रेजी शासन की आँख में खटकने लगी और अंग्रेजी शासन ने पुस्तक पर रोक लगाई। परतंत्र भारत में राष्ट्रीय जागरण की दृष्टि से 'हल्दीघाटी' महत्त्वपूर्ण थी। पाठकों एवं श्रोताओं के हृदय में मातृभूमि को स्वतंत्र कराने की भावनाएँ भड़कने लगती थी। इस प्रकार 'हल्दीघाटी' के रचना एवं प्रकाशन का समय भारतीय परिप्रेक्ष्य में सर्वथा अनुकूल था। बीसवीं सदी के अंत में प्रकाशित 'वीरवर कुँअर सिंह' यद्यपि प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक की वीरगाथा है, तथापि इसे अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम काल में किसी प्रकार की चेतना जगाने का श्रेय नहीं प्राप्त है, परंतु वर्त्तमान काल में लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका निभाने वाले नायकों के योगदान, साहस, आदि को बताने में तो योगदान है ही। गम्भीर परिस्थितियों में जहाँ लोग समर्पण कर देते है, वहीं कुँअर सिंह की वीरगाथा अत्यल्प साधनों के साथ गंभीर से गंभीर परिस्थितियों में भी अदम्य साहस के साथ शत्रु से डट कर मुकाबला करते हुए रणनीतिक सूझ–बूझ का प्रयोग कर दुश्मनों को धूल चटाने की है। दोनों ही महाकाव्य राष्ट्रीय चेतना को जगाते है।

अपनी मातृभूमि की स्वंत्रता हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करने वाले राजघराने के वीर शासक, मेवाड़ के लाल महराणा प्रताप थे, जिनके सम्पूर्ण जीवनवृत का वर्णन आलेख में विस्तार रूप से वर्णित है। विकट से विकट परिस्थिति में, जब जंगल में कई दिन भूखे रहे और पत्नी तथा बच्चे भूख से व्याकुल हो उठे, फिर भी इस शेर ने अपना सिर मुगलों के सामने नहीं झुकाया। लेकिन, आज किस वजह से युवामन अनगिनत घटनाओं को अंजाम देने से नहीं थकते। इन युवाओं में सुधार लाने हेतु यह शोध–प्रबंध पूर्ण प्रेरणादायक बने, ऐसी आशा की जा सकती है। शोध–प्रबंध में प्रकृति का सुंदर चित्रण किया गया है। साथ ही शृंगार रस का भी यथा स्थान वर्णन किया गया है। मान सिंह की फूफी से अकबर के विवाह के उपरांत प्रथम मिलन की कल्पना एवं उत्तेजना का भी वर्णन है जिसमें देश हित का दृश्य झलकता है। महाकवि श्यामनारायण पाण्डेय एवं श्री आरसी प्रसाद सिंह दोनों ने ही आलोच्य महाकाव्यों को सुंदर भाषा में रचा है। दोनों की ही भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। काव्य छन्दबद्ध है। शैली सुंदर है। दोनों में ही शृंगार रस भी मिश्रित है। 'हल्दीघाटी' में मानसिंह की बूआ का अकबर के साथ प्रसंग तथा 'वीरवर कुँअर सिंह' में धर्म का प्रसंग सुंदर अनुभूति प्रदान करते है।

वीरवर कुँअर सिंह को राष्ट्र से प्रेम था। पूरे भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त करने के लिए उन्होंने लड़ाई लड़ी। कुँअर सिंह ने अपना सम्राज्य अमर सिंह को समर्पित कर दिया और उसकी सुरक्षा का दायित्व देकर स्वयं मुक्त हो गए। आज उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। आज व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति हेतु लोग आपस में उलझते रहते हैं और हिंसा पर उतारू होते हैं। उनमें थोड़ी सी भी त्याग की भावना दिखाई नही पाड़ती है। वीर कुँअर सिंह ने अंग्रेजों के साथ जो युद्ध किया, वह सदियों तक लोगों को याद रहने वाला है।

निष्कर्ष :

आज हमारे भाई–बहनों, माताओं को भी उनकी कुर्वानियो से शिक्षा लेने की आवश्यकता है। महराणा प्रताप एवं बाबू कुँअर सिंह के राज्य व्यवस्था के बारे में कह सकते हैं कि राज्य में पूरी व्यवस्था जनता के हवाले थी। जातिगत भावना से ऊपर उठकर उनकी राजकीय व्यवस्था में हिंदू, मुसलमान, अगड़े–पिछड़े सभी सम्मिलित थे। आज भी हम सब को एक मत होने की आवश्कता है। अंग्रेजों ने कुँअर सिंह से जुड़े लोगों पर मुकदमा चला कर उसे एक दिन में ही फाँसी पर लटका दिया, फिर भी कुँअर सिंह को पकड़ने में अंग्रेजो को सफलता नहीं मिली। अपने वीरों की सकारात्मक नीति की वजह से वे अंग्रेजों के हत्थे चढने से बच गए। आज भी उन वीर महापुरुषों की गाथा व शौर्य को गाने का मौका हमारे नौनिहालों को मिले, उनके जीवन से शिक्षा प्राप्ति एवं उसे जीवन में उतारने का अवसर उसे मिले। भाई–भाई का हत्यारा न हो, बेटा बाप का दुश्मन न हो, सगे–संबंधी प्रपंची, लालची न हो, इसके लिए युवा भी उन महापुरुषों की जीवनी से शिक्षा लेते हुए प्रण ले की हमारे देश की बहु–बेटियों की रक्षा उनकी जिम्मेदारी है। देश की रक्षा हमारा कर्तव्य है, सेवा ही हमारा धर्म है। अतः किसी भी तरह हिंदुस्तान उन्नति करते रहे, यह युवाओं की तीव्र इच्छा होनी चाहिए ऐसे सकारात्मक भाव जगाने का प्रयास यह शोध–प्रबंध करेगा, जिससे स्वच्छ व निर्मल भारत का निर्माण होगा। आपात स्थिति में सारे देश को नेतृत्व देने में समर्थ होगा, राष्ट्रीय शक्ति को संगठित कर सकेगा, जिसमें संपूर्ण राष्ट्र एक मत हो सकेगा, यह मेरी तीव्र ईच्छा है।

संदर्भ–सूची :

1. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 39
2. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 54
3. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 51
4. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 60
5. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 59
6. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 65
7. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 63
8. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 72
9. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 73
10. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 74
11. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामंडल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 79–80